हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, बुधवार 22 जुलाई 2026

11 छात्रों ने जन्तर मन्तर पर लाठीचार्ज चार्ज के विरोध में ...

12 बेसबॉल में तिगड़ाना और घुसकानी की टीमों ने ...

खबर संक्षेप

गांव रावलधी में रात्रि ठहराव कार्यक्रम आज

चरखी दादरी। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के निर्देशों पर उपायुक्त मनदीप कौर और पुलिस अधीक्षक लोगेश कुमार पी सहित प्रशासनिक अधिकारी बुधवार 22 जुलाई को रावलधी गांव की पोस्ती पाना धर्मशाला में रात्रि ठहराव करेंगे। इस दौरान गांव की समस्याओं को सुना जाएगा और उनका समाधान भी किया जाएगा। साथ ही गांव के विकास को लेकर लोगों के सुझाव भी लिए जाएंगे।

20 वर्षीय युवक नहीं लौटा घर, मामला दर्ज

लोहारू। गांव दमकारो निवासी एक करीब 20 वर्षीय युवक सायं को घर नहीं लौटा। पुलिस दी शिकायत में दमकोरा निवासी गोर्धन ने बताया कि उसका करीब 20 वर्षीय बेटा सुरेंद्र दोपहर में खाना खाने के बाद बरालु गांव जाने की बात बोलकर घर से बाहर गया था। लेकिन सांय तक वह घर नही लौटा तो उसकी आस पड़ोस और गांव में काफी तलाश की गई लेकिन वह नही मिला। पुलिस ने गुमशुदगी की शिकायत दर्ज करके कार्रवाई शुरू कर दी है।

सिंगल यूज प्लास्टिक को लेकर चालान काटे

भिवानी। हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और नगर परिषद की संयुक्त टीम ने प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक व पॉलीथिन के खिलाफ विशेष अभियान चलाया। अभियान का नेतृत्व जेईई चंचल ने किया। हालू बाजार में निरीक्षण के दौरान प्रतिबंधित प्लास्टिक का उपयोग मिलने पर तीन चालान काटे गए और कुल 75 हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया। साथ ही करीब 36 किलोग्राम प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक सामग्री जब्त की गई। क्षेत्रीय अधिकारी शैलेंद्र अरोड़ा ने बताया कि लोगों को जागरूक करने के लिए शहर के प्रमुख स्थानों पर बैनर लगाए गए हैं, जिनके माध्यम से सिंगल यूज प्लास्टिक के पर्यावरण और स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभावों की जानकारी दी जा रही है। उन्होंने दुकानदारों और नागरिकों से प्लास्टिक का उपयोग पूरी तरह बंद करने और पर्यावरण संरक्षण में सहयोग देने की अपील की।

डंपर चालक नवीन की उपचार के दौरान मौत

तोशाम। ईशरवाल-तोशाम मार्ग स्थित रोढ़ा मोड़ पर सोमवार को हुए भीषण सड़क हादसे में डंपर चालक नवीन की भी उपचार के दौरान मौत हो गई। इससे पहले ट्राला चालक राजस्थान निवासी मुन्नाराम की आग में झुलसने से मौके पर ही जान चली गई थी। हादसे के बाद दुकानदारों ने कड़ी मशक्कत कर नवीन को जलते डंपर से बाहर निकाला और अस्पताल पहुंचाया, लेकिन हिसार के निजी अस्पताल में इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। नवीन दादरी जिले के झोझू गांव का निवासी, विवाहित और एक बेटे का पिता था। पुलिस ने शिकायत के आधार पर ट्राला चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है तथा दोनों शवों का पोस्टमार्टम कर परिजनों को सौंप दिया।

बाढ़ड़ा में जमकर बरसे बदरा, भिवानी में बूंदाबांदी

बाढ़ड़ा में 56, दादरी में 26 और बौंद में 15 एमएम पानी गिरा

चरखी दादरी में कुछ स्थानों पर बिजली लाइनों में स्पार्किंग और फॉल्ट की शिकायतें भी सामने आईं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी/भिवानी

जिले में बारिश का दौर मंगलवार को भी जारी रहा। सुबह से ही आसमान में बादल छाए रहे और रुक-रुककर हुई बारिश से मौसम सुहावना बना रहा। पिछले दो दिनों में जले के अलग-अलग क्षेत्रों में अच्छी वर्षा दर्ज की गई है। मंगलवार को दादरी में 26 एमएम, बाढड़ा में 56 एमएम और बौंद में 15 एमएम बारिश हुई। इससे पहले सोमवार को दादरी में 28 एमएम तथा बौंद में 13 एमएम वर्षा दर्ज की गई थी। इधर भिवानी में मंगलवार को अचानक मौसम ने करवट बदली। हल्की बूंदाबांदी व बौछारों ने शिखर पर बैठे पारे को दस डिग्री नीचे लुढका दिया। पारा नीचे आते ही लोगों को गर्मी व उमस से राहत मिली। बारिश के बाद मौसम सुहावना हो गया। बारिश के कारण शहर के कई हिस्सों में जलभराव की स्थिति बनी, लेकिन कुछ समय बाद अधिकांश स्थानों से पानी की निकासी हो गई। इससे लोगों को लंबे समय तक परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा। मंगलवार को हुई बारिश के दौरान कई सड़कों पर पानी भरने से वाहन चालकों और राहगीरों को असुविधा हुई। दोपहिया वाहन चालकों को पानी से गुजरते समय सावधानी बरतनी पड़ी। वहीं, बारिश के दौरान कुछ स्थानों पर बिजली लाइनों में स्पार्किंग और फॉल्ट की शिकायतें भी सामने आईं।

किसानों के चेहरे खिले

दो दिनों की बारिश ने किसानों के चेहरे पर खुशी ला दी है। जिले में बाजरा, कपास, धान, ज्वार, ग्वार, मूंग सहित अन्य खरीफ फसलें खेतों में खड़ी हैं। बीते दिनों बारिश नहीं होने के कारण किसान सिंचाई को लेकर चिंतित थे। अब हुई अच्छी वर्षा से खेतों में नमी की मात्रा बढ़ी है, जिससे फसलों की बढ़वार बेहतर होने की उम्मीद है। किसानों को अतिरिक्त सिंचाई खर्च से भी राहत मिलेगी।

30 जुलाई तक मौसम परिवर्तनशील रहने की संभावना

मौसम विशेषज्ञ डॉ. चंद्रमोहन के अनुसार 30 जुलाई तक मौसम परिवर्तनशील रहने की संभावना है। 26 जुलाई को पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने के कारण 30 जुलाई तक जिले में हल्की बारिश और बूंदाबांदी का दौर जारी रह सकता है। मौसम में बदलाव से तापमान में भी गिरावट दर्ज की गई है, जिससे लोगों को गर्मी और उमस से राहत मिली है।

लोहारू में 40 एमएम बरसात ने गर्मी से दिलाई राहत

लोहारू। मंगलवार को लोहारू और आसपास के इलाके में मौसम परिवर्तन के साथ हुई झमाझम बरसात ने लोगों को एक पखवाड़े से पड़ रही उमस भरी गर्मी से राहत प्रदान की है। मंगलवार से दोपहर बाद तक शहर में सावन सी झड़ी लगी रही। हालांकि बरसात ने शहर की जल निकासी व्यवस्था की भी पोल खोलकर रख दी वहीं बरसात ने किसानों के चेहरे भी खिला दिए हैं। मंगलवार सांय तक शहर में 40 एमएम बरसात दर्ज की गई है।बता दें कि देर रात को मौसम में बदलाव के साथ बरसात का दौर शुरू हो गया। यह बरसात मानसून की दस्तक मानी जा रही है। मंगलवार को सुबह से ही लोहारू शहर आस पास के इलाके में बादलों की गर्जना के बाद झमाझम बरसात का दौर शुरू हो गया। दोपहर बाद तक इलाके में रुक रुक कर बरसात होती रही।

शहर में यहा हुआ जलभराव

मंगलवार को हुई बारिश के कारण मुख्य बाजार, रेलवे स्टेशन, सूरजगढ़ रोड, पुराना शहर, चौ देवीलाल चौक और लोक निर्माण विश्राम गृह के सामने एक बार फिर लोगों को बरसाती पानी जमा होने की समस्या से जूझना पड़ा। शहर के लोगों के लोगों ने नपा प्रशासन से जल निकासी व्यवस्था को दुरुस्त करने और नालों व सीवरेज की सफाई बेहतर ढंग से करवाने की मांग की है।

ढलान वाले इलाके में जलभराव की बनी स्थिति, फसलों की जान में आई जान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

इधर भिवानी में मंगलवार को अचानक मौसम ने करवट बदली। हल्की बूंदाबांदी व बौछारों ने शिखर पर बैठे पारे को दस डिग्री नीचे लुढका दिया। पारा नीचे आते ही लोगों को गर्मी व उमस से राहत मिली। बारिश के बाद मौसम सुहावना हो गया। दूसरी तरफ बारिश के बाद शहर में कई जगहों पर जलभराव की स्थिति बनी। हालांकि बारिश थमने के आधे घंटे बाद बारिश का जमा पानी की निकासी हो गई,लेकिन जितने वक्त सड़कों व गलियों में जमा पानी के बीच से ही लोगों अपने गंतव्य तक पहुंचना पड़ा। दूसरी तरफ बारिश से कपास, ज्वार व बाजरे की फसल की जान में जान आ गई। चूंकि पिछले कई दिनों से खरीफ फसलों को सिंचाई की बेहद सख्त जरूरत थी। पानी के अभाव में फसलें मुरझाने लगी थी। आज बारिश आते ही फसलों में रौनक आ गई।

सुबह लोग जब सोकर उठे तो उस वक्त आसमान काली घटाओं से अटा हुआ था। धीमी गति से हवा बह रही थी। लोगों को लगा था कि आज भी पहले की तरफ कुछ देर बाद घटाटोप बिखर जाएगा,लेकिन आज बादलों का जमघट आगे नहीं गया। करीब आठ बजे आसमान से बोच्छार गिरनी शुरू हो गई। कुछ देर तक आसमान से बोच्छार गिरी। उसके बाद फिर से बारिश ने गति पकड़ी। देहात में कम तो शहरों में करीब आधे घंटे तक खूब पानी बरसा। पानी बरसने के दौरान पारा 40 डिग्री सेल्सियस से एकदम 30 डिग्र सेल्सियस पर आ गया। पारा नीचे आते ही लोगों को गर्मी व उसम से राहत मिली। चूंकि पिछले कई दिनों से पारा रूठ कर शिखर पर बैठा हुआ था। नीचे आने का नाम ही नहीं ले रहा था। मंगलवार को हुई बारिश ने पारे को नीचे आने पर मजबूर कर दिया। शहरी और ग्रामीण लोगों ने बारिश का खूब आनंद लिया। कई जगह पर हुए जलभराव में बच्चे मस्ती करते नजर आए। कई दिनों से पड़ रही भीषण गर्मी और उमस ने लोगों का जीना मुहाल कर दिया था। मंगलवार को हुई बारिश ने गर्मी और उमस से काफी राहत दिलाई है। धर बिना बारिश व सिंचाई के खरीफ की फसलें दम तोड़ने लगी थी। खासकर धान की रोपाई करने के बाद पानी के अभाव में खेतों में दरार आ गई थी। कुछ दरारों में पौधें समा गई थी। आज बारिश के बाद धान की पौधों में भी रौनक आ गई।

किसानों के चेहरे पर आई मुस्कान

बवानीखेड़ा क्षेत्र में सोमवार को हुई हल्की-फुल्की बारिश ने लोगों को उमस भरी गर्मी से बड़ी राहत दिलाई। पिछले कई दिनों से तेज धूप और गर्म हवाओं से परेशान लोगों ने मौसम के सुहावने होने पर राहत महसूस की। बारिश के बाद तापमान में गिरावट दर्ज की गई, जिससे वातावरण खुशनुमा हो गया। बारिश का सबसे अधिक फायदा किसानों को होता दिखाई दिया। खेतों में खड़ी फसलों को नमी मिलने से किसानों के चेहरों पर मुस्कान लौट आई है। किसानों का कहना है कि समय पर हुई यह बारिश फसलों की बढ़वार के लिए लाभदायक साबित होगी और सिंचाई की आवश्यकता भी कुछ हद तक कम होगी। मौसम विभाग के अनुसार आने वाले दिनों में भी क्षेत्र में बादल छाए रहने और कहीं-कहीं हल्की बारिश होने की संभावना बनी हुई है। किसानों का कहना है कि यदि इसी तरह मौसम मेहरबान रहा तो खरीफ फसलों को काफी लाभ मिलेगा और कृषि कार्यों में तेजी आएगी।

हादसे में चार बहनों के इकलौते भाई की मौत

तोशाम। ईशरवाल-मिरान मार्ग पर झूल्ली चौराहे के पास मोटरसाइकिल की टक्कर लग जाने से एक क़रीबन 42 वर्षीय मंढ़ान निवासी व्यक्ति की मौत हो गई। पुलिस ने मृतक के चाचा की शिकायत पर अज्ञात मोटरसाईकिल चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

उपचार के दौरान तोड़ा दम : मंढ़ान निवासी सुनील ने बताया कि उसका भतीजा मृतक संदीप सायं के समय घर से खेत की कहकर निकला था। जब वह वापस नहीं आया तो उसकी तलाश शुरू की। सुनील ने बताया कि बाद में पता चला की उसका झूल्ली चौक पर अज्ञात मोटरसाइकिल की टक्कर से एक्सीडेंट हो गया। जिसको उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया है। संदीप ने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस ने मृतक के चाचा की शिकायत पर अज्ञात मोटरसाइकिल चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

बेटी के सिर से उठ गया पिता का साया

मढ़ान निवासी क़रीबन 42 वर्षीय संदीप 4 बहनों का इकलौता भाई था। वहीं संदीप एक बेटी का पिता भी था। संदीप की मौत के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। संदीप की मौत के बाद उनके घर का चिराग बुझ गया।

फीस जमा करवाने की अंतिम तिथि आज कल जारी होगी खाली सीटों की सूची

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) कलाली-बलाली में शैक्षणिक सत्र 2026 के लिए विभिन्न तकनीकी एवं गैर-तकनीकी ट्रेडों में प्रवेश प्रक्रिया जारी है। संस्थान के प्रधानाचार्य सुरजीत सिंह ने बताया कि विभाग की ओर से प्रथम चरण की काउंसलिंग का परिणाम 17 जुलाई को जारी किया गया था। प्रथम चरण में चयनित अभ्यर्थियों के लिए प्रवेश शुल्क जमा कराने की अंतिम तिथि 22 जुलाई निर्धारित की गई है। उन्होंने बताया कि प्रथम चरण की प्रक्रिया पूरी होने के बाद विभाग 23 जुलाई को आधिकारिक वेबसाइट पर रिक्त सीटों का विवरण जारी करेगा।

जिन विद्यार्थियों को प्रथम चरण में आवंटित ट्रेड पसंद नहीं है, वे द्वितीय चरण की काउंसलिंग में भाग लेकर उपलब्ध रिक्त सीटों के आधार पर नया विकल्प चुन सकते हैं। वहीं, जिन अभ्यर्थियों का प्रथम चरण में चयन नहीं हो पाया, वे अपनी प्राथमिकताओं में संशोधन कर दोबारा प्रवेश प्रक्रिया में शामिल हो सकते हैं। द्वितीय चरण के तहत सीट आवंटन 28 जुलाई को किया जाएगा। चयनित अभ्यर्थियों के दस्तावेजों का सत्यापन 28 से 31 जुलाई तक होगा, जबकि प्रवेश शुल्क जमा कराने की अंतिम तिथि 1 अगस्त रहेगी।

इन ट्रेडों में प्रवेश ...

संस्थान में इस वर्ष इलेक्ट्रीशियन (एनसीवीटी व एससीवीटी), फिटर ड्यूल, वेल्डर, कंप्यूटर ऑपरेटर एंड प्रोग्रामिंग असिस्टेंट (कोपा), पेंटर, मोटर मैकेनिक व्हीकल, सोलर टेक्नीशियन इलेक्ट्रिकल, टर्नर, ड्रेस मेकिंग, रेफ्रिजरेशन एंड एयर कंडीशनिंग, वायरमैन तथा प्लंबर (एनसीवीटी व एससीवीटी) सहित अनेक रोजगारपरक ट्रेडों में प्रवेश दिए जा रहे हैं।

अग्रवाल समाज ने पेश की मिसाल, शादियों में फिजूलखर्ची पर लगाई रोक

बेटी की शादी में मिठाई का डिब्बा देने और बेटे की शादी में शगुन लेने पर लगाई बंदिश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी के अग्रवाल समाज ने शादी-ब्याह में बढ़ती फिजूलखर्ची और सामाजिक दिखावे पर अंकुश लगाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की है। अग्रसेन विवाह प्रकोष्ठ के तत्वावधान में कमला भवन धर्मशाला में आयोजित बैठक में सर्वसम्मति से कई अहम निर्णय लिए गए।

अब बेटी की शादी में मिठाई का डिब्बा देने-लेने और लड़के की शादी में शगुन की परंपरा पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा। तिलक, पुरोजन एवं अन्य विवाह संस्कारों में मिलनी की राशि अधिकतम 100 रुपये तय की गई। अध्यक्ष रामदेव तायल ने कहा कि यह सामाजिक सुधार की शुरुआत है और भविष्य में अन्य कुरीतियों पर भी रोक लगाई जाएगी। उन्होंने आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की विवाह योग्य बेटियों के लिए जांच के बाद दो लाख रुपये तक की सहायता देने की घोषणा भी की। बैठक में श्री अग्रवाल सभा के प्रधान सुनील सर्राफ सहित समाज के अनेक गणमान्य लोगों ने इन निर्णयों का समर्थन किया। इस अवसर पर पवन बवानीवाला, प्रवीण कोकड़ा, रामनिवास सीवानीवाला, राजकुमार लालावासिया, नरेश गर्ग, सुभाष खरकिया, मनोज रामपुरिया, सुरेश बंसल, मनोज दीवान आदि मौजूद रहे।

रेखा मेरे करीब बैठतीं और मुझे सहज महसूस कराती थीं : शेखर

नई दिल्ली। साल 1984 में आई फिल्म 'उत्सव' से शेखर सुमन ने अपने फिल्मी कॅरियर की शुरुआत की थी। इस फिल्म में उनके साथ रेखा लीड रोल में थीं। हाल ही में शेखर ने एक बातचीत में बताया कि उस समय रेखा इंडस्ट्री की बड़ी स्टार थीं, लेकिन उन्होंने कभी उन्हें ये एहसास नहीं होने दिया कि वो फिल्मों में नए कलाकार हैं। शेखर ने एक बातचीत के दौरान कहा कि कई बड़े सितारे अपने स्टारडम का असर सेट पर दिखाते हैं, लेकिन रेखा का स्वभाव बिल्कुल अलग था। वह उनके साथ बैठतीं, बातें करतीं और उन्हें सहज महसूस कराती थीं। इसी वजह से कैमरे के सामने काम करना उनके लिए आसान हो गया। एक्टर ने कहा, 'उन्होंने शुरू से ही ऐसा किया।

लाइफ Style

साहिबा

कोई नेशनल न्यूज नहीं है मेरी डेटिंग लाइफ

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

एक्टर और डिजिटल क्रिएटर साहिबा बाली ने अपनी पर्सनल लाइफ और अर्जुन कपूर के साथ डेटिंग की अफवाहों पर होने वाली कवरेज की आलोचना की है और लोगों से कहा है कि वे ज्यादा जरूरी मुद्दों पर ध्यान दें।

उनका यह बयान लंदन में भारतीय उच्चायोग के बाहर हुई एक सभा की फोटो शेयर करने के बाद आया। हाल ही में अपनी पर्सनल लाइफ पर मिल रही अटेंशन पर प्रतिक्रिया देते हुए साहिबा बाली ने कहा कि उनकी डेटिंग लाइफ कोई नेशनल न्यूज नहीं है और मीडिया से अपील की कि वे ऐसी कहानियों पर ध्यान दें जो सच में लोगों का ध्यान खींचने लायक हैं। तस्वीर के साथ उन्होंने लिखा, 'डियर मीडिया, लंदन में मेरी डेटिंग लाइफ/दोस्ती के बारे में अंदाजे लगाना बंद करो, यह कोई नेशनल न्यूज़ नहीं है। अगर दिखाना ही है तो कुछ अच्छा दिखाओ'। साहिबा का यह बयान तब आया है जब अर्जुन कपूर के साथ उनके डेटिंग की अफवाहें तेजी से फैल रही थीं। यह चर्चा तब शुरू हुई जब दोनों को लंदन के मशहूर लॉर्ड्स क्रिकेट ग्राउंड में भारत और इंग्लैंड के बीच तीसरे वनडे मैच के दौरान एक साथ देखा गया, जिससे सोशल मीडिया पर काफी बातें होने लगीं। इस चर्चा पर प्रतिक्रिया देते हुए, साहिबा ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर अर्जुन के साथ एक तस्वीर शेयर की और एक मजाकिया कैप्शन के साथ इन अफवाहों को खारिज करने की कोशिश की, जिसमें लिखा था, 'हर बात पर यकीन न करें'।

हॉलीवुड मसाला

पर्दे पर फिर लौटेगा सुपरहीरो

डेडपूल...

नई दिल्ली। भारत में मार्वल सिनेमैटिक यूनिवर्स के बैनर तले बनने वालीं सुपरहीरोज मूवीज का क्रेज काफी देखने को मिलता है। कैप्टन अमेरिका से लेकर स्पाइडर मैन तक तमाम एमसीयू मूवीज ने दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया है। इसके अलावा डेडपूल भी मार्वल का वह सुपरहीरो कैरेक्टर है, जिसे इंडिया में काफी पसंद किया जाता है। अब खबर आ रही है कि एमसीयू डेडपूल 4 की तैयारी में लगा हुआ है, जिसका कन्फर्मेशन हॉलीवुड अभिनेता रयान रेनॉल्ड्स की तरफ से आया है।

अवेंजर्स ... का ट्रेलर रिलीज लौट गए कैप्टन अमेरिका

लॉस एंजिल्स। बहुप्रतीक्षित फिल्म 'अवेंजर्सः डूम्सडे' का ट्रेलर रिलीज हो गया है। डॉक्टर डूम से लड़ने के लिए क्रिस हेम्सवर्थ और मार्वल सिनेमैटिक यूनिवर्स व अन्य जगहों के कई सुपरहीरो वापस आए हैं। पहले ट्रेलर में पिछली मार्वल और एक्स-मेन फिल्मों के कई मशहूर किरदार दिखाई देते हैं। एवेंजर्स सीक्वल के पहले ट्रेलर में एक बड़ी टीम दिखाई गई है। ये लोग दुनिया को बचाने के लिए एकजुट हो रहे हैं। थोर (क्रिस हेम्सवर्थ) असल लीडर की भूमिका निभाते हैं। थोर चेतावनी देता है कि अगर वे अभी एक साथ नहीं खड़े हुए, तो उनकी पिछली कुर्बानियां बेकार चली जाएंगी। वह उनसे अपनी छोटी-मोटी लड़ाइयां भुलाकर लड़ने के लिए कहता है। दो मिनट 26 सेकंड का यह ट्रेलर एक जबरदस्त रीयूनियन के साथ खत्म होता है।

सलमान की मातृभूमि का नया पोस्टर जारी

मुंबई। मेकर्स ने फिल्म 'मातृभूमि' का एक नया पोस्टर साझा किया है। इसी के साथ निर्माताओं ने इसकी रिलीज डेट से भी पर्दा उठा दिया है। फिल्म 'मातृभूमि' का एक नया पोस्टर सोशल मीडिया (एक्स) पर शेयर किया गया है। पोस्टर के साथ लिखा गया है- 'एक सैनिक का वादा। एक परिवार की ताकत। एक राष्ट्र का गौरव।' इस पोस्टर के हिसाब से 'मातृभूमि' इसी साल रिलीज होगी। हालांकि, मेकर्स ने अभी तक रिलीज की पक्की तारीख नहीं बताई है, लेकिन यह तय है कि फिल्म इसी साल पर्दे पर आएगी। इस नए पोस्टर पर ध्यान देने वाली बात यह है कि इसमें निर्देशक का नाम नहीं लिखा है। इस पर सिर्फ सलमान खान फिल्म्स की एक फिल्म लिखा है। मेकर्स ने अभी तक इसकी वजह नहीं बताई है। शुरुआत में इस फिल्म का नाम 'बैटल ऑफ गलवां' रखा गया था।

मिर्जापुर की शूटिंग हुई असली श्मशान में

मुंबई। मिर्जापुर 3 में मुन्ना भैया के अंतिम संस्कार वाला सीन तो याद ही होगा, जिसने सीजन तीन को एक अलग ही खामोशी की गहराई में छिपा दिया था। इस सीन में जान डालने के लिए मेकर्स ने इसे किसी नकली सेट पर नहीं, बल्कि एक असली और चालू श्मशान घाट पर शूट किया था। वेब सीरीज के मेकर्स को इस बारे में सख्त हिदायतें दी गई थीं, इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने यह इमोशनल सीन शूट किया। मिर्जापुर 3 के मेकर्स ने बताया कि असली श्मशान घाट में शूटिंग करना किसी चुनौती से कम नहीं था। शूटिंग को लेकर वहां के प्रबंधक ने के कड़े नियमों और मर्यादा का पालन करने के लिए मेकर्स को हिदायत दे रखी थी। साथ ही शूटिंग के लिए क्रू को बेहद कम समय की शूटिंग विंडो दी गई थी।

टीवी मसाला

ऑपरेशन सफेद सागर में सब पर भारी पड़े बरुन, दीया दमदार

नई दिल्ली। आने वाली स्ट्रीमिंग सीरीज 'ऑपरेशन सफेद सागर' का ट्रेलर रिलीज हो गया है। यह मिलिट्री ड्रामा कारगिल युद्ध के दौरान इंडियन एयर फोर्स के सबसे मुश्किल ऑपरेशन्स में से एक पर आधारित है। ओनी सेन के निर्देशन और अभिजीत सिंह परमार व कुशल श्रीवास्तव द्वारा बनाई गई यह सीरीज इस ऑपरेशन से जुड़े लोगों पर बेस्ड है। इसमें सिद्धार्थ, जिमी शेरगिल, अभय वर्मा, दीया मिर्जा, प्राजक्ता कोली, आदिल हुसैन, मिहिर आहूजा, तारुक रैना, अर्णव भसीन और अमृता बागची जैसे कलाकार हैं। जिमी शेरगिल विंग कमांडर बी.एस. धनोआ (जिन्हें टोनी के नाम से भी जाना जाता है) का किरदार निभा रहे हैं, जबकि सिद्धार्थ स्क्वाड्रन लीडर अजय आहूजा की भूमिका में हैं। ट्रेलर में उन्हें तेजी से बढ़ते संघर्ष के बीच दिखाया गया है, क्योंकि स्क्वाड्रन को कारगिल की पहाड़ियों में भारतीय सेना के ऑपरेशन में मदद करने का काम सौंपा गया है। युवा अधिकारियों में फ्लाइंग ऑफिसर आर.एस. धालीवाल के तौर पर अभय वर्मा, फ्लाइंग ऑफिसर सी.एच. बाल रेड्डी के तौर पर मिहिर आहूजा, फ्लाइट लेफ्टिनेंट जितेंद्र सांगवान के तौर पर तारुक रैना और फ्लाइंग ऑफिसर अमित गुप्ता के तौर पर अर्णव भसीन शामिल हैं। इस सीरीज में ऑपरेशन को सिर्फ एयरक्राफ्ट और लड़ाई-झगड़े के तमाशे के तौर पर नहीं दिखाया गया है, बल्कि यह स्क्वाड्रन के अंदर लिए गए मुश्किल फैसलों पर भी ध्यान देती है। इसमें दिखाया गया है कि पायलट कैसे डर, जिम्मेदारी और इस संभावना का सामना करते हैं कि हर उड़ान उनकी आखिरी उड़ान हो सकती है।

दूरदर्शन का सबसे लंबा चलने वाला शो

नई दिल्ली। दूरदर्शन में रामायण, महाभारत और चित्रहार जैसे कई लोकप्रिय कार्यक्रमों ने दर्शकों का दिल जीता, लेकिन एक शो ऐसा भी है जो इन सबसे पहले शुरू हुआ और आज भी लगातार प्रसारित हो रहा है। इस कार्यक्रम का नाम 'कृषि दर्शन' है. यह भारतीय टेलीविजन के सबसे लंबे समय तक चलने वाले कार्यक्रमों में शामिल है और इसके 16,000 से ज्यादा एपिसोड प्रसारित हो चुके हैं। यही वजह है कि इसका नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में भी दर्ज किया जा चुका है। कृषि दर्शन की शुरुआत 26 जनवरी 1967 को दूरदर्शन पर हुई थी। शुरुआत में यह कार्यक्रम दिल्ली और उसके आसपास के करीब 80 गांवों के किसानों को खेती से जुड़ी नई तकनीक, फसल प्रबंधन और सरकारी योजनाओं की जानकारी देने के उद्देश्य से बनाया गया था। समय के साथ इसकी लोकप्रियता बढ़ती गई और यह देश के सबसे लंबे समय तक प्रसारित होने वाले टीवी कार्यक्रमों में शामिल हो गया।

थलपति विजय की फिल्म का हिंदी में होगा ऐसा हाल

जन नायकन बनेगी तीसरी सबसे बड़ी ओपनिंग वाली मूवी

नई दिल्ली। थलपति विजय की आखिरी फिल्म 'जन नायकन' रिलीज के लिए तैयार है। फिल्म 23 जुलाई को बड़े पर्दे पर रिलीज हो रही है। कोईमोई के मुताबिक, फिल्म का पहले दिन का कलेक्शन हिंदी में 'ग्रेटेस्ट ऑफ ऑल टाइम' से भी कम होने वाला है। लियो के केस में लोकेश सिनमैटिक यूनिवर्स की वजह से काफी हाइप था। इसी वजह से फिल्म ने हिंदी में 2.85 करोड़ की ओपनिंग की थी। वहीं, 'ग्रेटेस्ट ऑफ ऑल टाइम' को भी ओपनिंग डे पर अच्छा रिस्पॉन्स मिला। वहीं 'जन नायकन' की बात करें तो फिल्म क हिंदी वर्जन क ओपनिंग डे पर 1.4 से 1.8 करोड़ तक कमाने की खबरें हैं। अगर ऐसा हुआ तो फिल्म थलपति विजय की हिंदी में तीसरी बिगेस्ट ओपनिंग वाली फिल्म बन जाएगी। इस लिस्ट में 'लियो' सबसे आगे है। 'लियो' ने 2.85 करोड़ की ओपनिंग की थी। दूसरे नंबर पर 'द ग्रेटेस्ट ऑफ ऑल टाइम' है। इस फिल्म ने 2.1 करोड़ कमाए थे। तीसरे नंबर पर 'वरिसु' है। इस फिल्म ने 70 लाख कमाए थे। चौथे नंबर पर 'बीस्ट' है. फिल्म ने 60 लाख की ओपनिंग की थी। पांचवें नंबर पर 'मास्टर' है. फिल्म ने 50 लाख कमाए थे।

विलेन की अदाकारी करते वक्त मुझसे मत उलझना

नई दिल्ली। पर्दे पर गंभीर और चैलेंजिंग किरदारों के लिए पहचान बनाने वाले केके मेनन अभिनय को अलग नजरिए से देखते हैं। उनका मानना है कि किसी भी किरदार को निभाने से पहले उसे अपने भीतर तलाशना जरूरी है। 'आदर्श बाल विद्यालय' के प्रमोशन के दौरान एक बातचीत में उन्होंने अभिनय, किरदार और अपने काम को लेकर खुलकर बात की। सीरीज में अपने किरदार ज्ञानेश्वर पर बात करते हुए केके मेनन कहते हैं, 'अगर मैं अपने भीतर से ज्ञानेश्वर को नहीं निकालूंगा तो मैं फेक एक्टिंग कर रहा होऊंगा। मैं जो भी करता हूं, उसमें बुरे किरदार भी मेरे भीतर से ही आते हैं। अगर ऐसा नहीं हुआ तो वह सिर्फ एक्टिंग रह जाएगी। इसलिए, मैं हमेशा कहता हूं कि जब मैं कोई बहुत बुरा किरदार निभा रहा होता हूं तो 'एक्शन' और 'कट' के बीच मुझसे मत उलझना। क्योंकि, उस वक्त मैं केके मेनन नहीं होता। मैं अपने भीतर की उसी बुराई को जी रहा होता हूं। मैं हर किरदार को इसी तरह अप्रोच करता हूं।' किरदार की तैयारी के सवाल पर केके मेनन कहते हैं, 'मैं टेक्स्ट पर बहुत भरोसा करता हूं। डायरेक्टर और राइटर मेरे लिए बहुत मदद करते हैं। मैं स्क्रिप्ट को न जाने कितनी बार पढ़ता हूं। मेरे लिए यही सबसे पक्का तरीका है, क्योंकि जितनी बार आप स्क्रिप्ट पढ़ते हैं, हर बार वह आपको कुछ यूनिक देती है। इसमें कोई रॉकेट साइंस नहीं है।'

मैं सब कुछ नहीं जानता : रोल चुनने को लेकर केके मेनन का कहना है, 'मैंने रोल इसलिए नहीं छोड़ा कि वह सुरक्षित था। मैंने सिर्फ इसलिए छोड़ा क्योंकि उसने मेरी दिलचस्पी नहीं जगाई। रोल चुनने का कोई फॉर्मूला नहीं है। जो मुझे पसंद नहीं आता, वही किसी दूसरे अभिनेता को पसंद आ सकता है। इसलिए मैं यह भी नहीं सोचता कि मैं सब जानता हूं। मुझसे भी गलती हो सकती है।'

टेंशन जरूरी है

करीब तीन दशक के लंबे करियर के बाद भी केके मेनन की तैयारी में कोई ढील नहीं आई है। क्या इतने वर्षों बाद भी पहले दिन शूटिंग पर घबराहट होती है? इस पर केके मेनन कहते हैं, 'मैं इसे नर्वसनेस नहीं, एसेंशियल टेंशन कहता हूं। थोड़ा-सा टेंशन होना जरूरी है, नहीं तो काम नहीं करता। जैसे 100 मीटर का धावक स्टार्ट लाइन पर खड़ा होता है या क्रिकेटर पहली गेंद खेलने जाता है। हर किसी के भीतर वह थोड़ा-सा टेंशन होना चाहिए, जो आपको अपने पैरों पर खड़ा रखे। बस वह स्ट्रेस नहीं बनना चाहिए।'

वो सनकी संगीतकार, जिनके जनाजे में शामिल हुए फिल्मी दुनिया के सिर्फ दो लोग

लता का किया अपमान, किशोर दा को बताया शोर कुमार

नई दिल्ली। म्यूजिक की दुनिया में कई ऐसी दिग्गज हस्तियां आई हैं, जिन्होंने एक से बढ़कर एक कालजयी गाने बनाए, लेकिन उनकी अपनी पहचान गुमनाम ही रह गई। 5 दशक से अधिक समय तक संगीत जगत में एक अलग पहचान बनाने वाले नामों में एक नाम उस संगीतकार का भी है, जिन्होंने हिंदी सिनेमा के संगीत को एक नया आयाम दिया। उन्हें न सिर्फ भारतीय सिनेमा में उनके अलग संगीत और 22 हजार से अधिक गानों में मैंडोलिन बजाने के लिए जाना जाता है, बल्कि अपने सनकी और मूडी स्वभाव के कारण भी वे अक्सर सुर्खियों में रहे। कौन थे वे संगीतकार, जिनकी अंतिम विदाई में सिर्फ दो बॉलीवुड हस्तियां पहुंची थीं और जिन्होंने लता मंगेशकर जैसी दिग्गज गायिका की भी क्लास लगा दी थी?

क्यों कहा जाता था उन्हें बेबाक और सनकी?

हम बात कर रहे हैं मशहूर संगीतकार सज्जाद हुसैन की। 5 दशक से ज्यादा समय तक संगीत की दुनिया में सक्रिय रहे सज्जाद हिंदी सिनेमा की सबसे विवादित हस्तियों में से एक रहे। उनका गुस्सैल स्वभाव, बेबाक बोल और समझौता न करने की आदत अक्सर उन्हें विवादों में डाल देती थी।

गीतकार डीएन मधोक से हो गया था झगड़ा

साल 1944 में आई फिल्म 'दोस्त' के शानदार संगीत की सफलता का श्रेय जब निर्देशक शौकत हुसैन रिजवी ने अपनी पत्नी नूरजहां को दिया, तो स्वाभिमानी सज्जाद ने कसम खा ली कि वे अब कभी उनकी पत्नी के लिए गाना कंपोज नहीं करेंगे। वहीं, फिल्म 'सैंया' की रिकॉर्डिंग के दौरान उनका गीतकार डी.एन. मधोक से झगड़ा हो गया था। यही नहीं, एक बार लता मंगेशकर को लेकर की गई उनकी टिप्पणी के कारण दोनों के बीच बातचीत बंद हो गई थी।

20 से ज्यादा बड़े प्रोजेक्ट्स गंवा दिए

सज्जाद हुसैन के इस बेबाक और कड़वे स्वभाव के कारण धीरे-धीरे लोग उनसे दूर होने लगे। अपने 34 साल के कॅरियर में उन्होंने अपने अड़ियल रवैये की वजह से 20 से ज्यादा बड़े प्रोजेक्ट्स गंवा दिए। लता मंगेशकर ने एक पुराने इंटरव्यू में माना था कि सज्जाद हुसैन के साथ काम करने में घबराहट होती थी, क्योंकि वे बारीकियों पर बहुत ध्यान देते थे और उन्हें जरा भी लाउड गाना पसंद नहीं था।

दिलीप कुमार से हो गई थी अनबन

सज्जाद हुसैन ने सिर्फ नूरजहां या लता मंगेशकर से ही पंगा नहीं लिया, बल्कि 'संगदिल' की शूटिंग के दौरान दिलीप कुमार से भी उनकी अनबन हो गई। वे अपनी तीखी बयानबाजी के लिए मशहूर थे, उन्होंने तलत महमूद को 'गलत महमूद' और किशोर कुमार को 'शोर कुमार' तक कह दिया था। कहा जाता है कि निर्माता-निर्देशक के. आसिफ से हुए मनमुटाव के कारण ही उनके हाथ से 'मुगल-ए-आजम' जैसी ऐतिहासिक फिल्म का संगीत निकल गया था।

उधास-खय्याम पहुंचे थे अंतिम विदाई देने

महान संगीतकार सज्जाद हुसैन का निधन 21 जुलाई 1995 को माहिम स्थित उनके घर पर हुआ। जब उनकी अंतिम यात्रा निकली, तो उनके पांच बेटों और एक बेटी के अलावा पूरी फिल्म इंडस्ट्री से सिर्फ दो लोग मशहूर गायक पंकज उधास और संगीतकार खय्याम ही उन्हें अंतिम विदाई देने पहुंचे थे।

खबर संक्षेप

बैठक में आगामी कार्यक्रमों पर की चर्चा

तोशाम। बापौडा मंडल के बापौडा, लेघा, शिमली, केहरपुरा, टीटानी शक्तिकेंद्र की बैठक मंडल अध्यक्ष जगत कौशिक की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक के दौरान संगठनात्मक आगामी कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा हुई। इस अवसर पर रेखा राघव, किरनपाल सिंह, दिनेश, सतपाल, महेंद्र मास्टर, ललित शर्मा, बजरंग, प्रताप सिंह, बिंदर, सुनील शास्त्री, इमरान, अनूप, राजेश, राजबीर, राजपाल जोगी, पवन, जितेंद्र दुग्गल, कश्मीर सिंह, अनिल आदि अनेक कार्यकर्त्ता मौजूद रहे।

बारिश की झड़ी के बीच भी किसानों का धरना जारी

बवानीखेड़ा। सुंदर ब्रांच नहर में 15 दिन तक नियमित जलापूर्ति की मांग को लेकर अखिल भारतीय किसान सभा के बैनर तले जमालपुर गांव में चल रहा किसानों का धरना सोमवार को भी जारी रहा। लगातार हो रही बारिश के बावजूद किसान और ग्रामीण बड़ी संख्या में धरना स्थल पर डटे रहे। आसपास के गांवों से पुरुषों और महिलाओं की लगातार भागीदारी देखने को मिली। धरने में पूर्व सरपंच जगदीश रतेरा, एडवोकेट गुलशन काठपालिया भुरटाना, हरिसिंह यादव, कृष्ण कुमार, प्रहलाद, सुनील, बिमला, शालीन्द्रा, राजबाला, रामकली तथा रोशनी देवी सहित अनेक ग्रामीण मौजूद रहे।

एसआईआर से संबंधित कार्य समय पर हो पूरा

चरखी दादरी। प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी जे गणेशन ने वीसी के माध्यम से जिले में किए जा रहे एसआईआर कार्य की समीक्षा की और कहा कि यह कार्य तय की गई समय सीमा में ही पूरा हो जाना चाहिए। वीसी में उपायुक्त एवं जिला निर्वाचन अधिकारी मनदीप कौर ने जिले में किए जा रहे कार्य की जानकारी दी।

मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान मेला 26 को

भिवानी। पंचायत भवन में 26 जुलाई को सुबह नौ बजे से पांच बजे तक भिवानी विधानसभा क्षेत्र से आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के जीवन उत्थान के लिए मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान मेले का आयोजन किया जाएगा। इस मेले में जनकल्याणकारी योजनाओं से संबंधित विभिन्न 19 विभागों द्वारा स्टाल लगाई जाएंगी। मेले में एक लाख रुपये से कम वार्षिक आय वाले व्यक्तियों को बुलाया गया है। ऐसे परिवारों में से किसी भी एक व्यक्ति को उसकी योग्यता और इच्छानुसार पात्रता के अनुरूप एक योजना का लाभ दिलाने के लिए आवेदन करवाया जाएगा।

विश्व हिंदू परिषद ने बेटियों को किया जागरूक

भिवानी। विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल द्वारा लगातार स्कूलों में अपनी संस्कृति-अपने संस्कार, जनसंपर्क अभियान चलाया जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य हमारे बच्चों में सेवा, सुरक्षा, संस्कार और अपने धर्म के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक करना है। इसी कड़ी में पीएमश्री राजकीय कन्या वमा स्कूल में विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल के जिला मंत्री गोपाल तंवर का स्कूल में प्रवास रहा, जिसमें बेटियों की संख्या 1100 के करीब रही। इस दौरान बेटियों को अपनी संस्कृति अपने संस्कार के बारे में बताया।

डॉ. सोनू को सौंपी मंदिर की जिम्मेदारी

तोशाम। हांसी मार्ग पर विश्वास नगर में स्थित रविदास मंदिर में तारागिरी महाराज के चोला छोड़ने के पश्चात गत सोमवार रात्रि साध संगत ने डॉ. सोनू को मंदिर की जिम्मेदारी देते हुए तारा गिरी की गद्दी सौंपी। इस मौके पर मंदिर परिसर में सत्संग व भंडारे का भी आयोजन किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार चोला छोड़ने से पहले महाराज तारागिरी द्वारा डॉक्टर सोनू को माला व चोला दिया गया था, महाराज तारा गिरी की इच्छा को पूरी करते हुए साथ संगत ने रात्रि मंदिर परिसर में कार्यक्रम आयोजित कर डॉक्टर सोनू को महाराज तारागिरी की गद्दी सौंपी।

सरकार की कायराना हरकत को छात्र कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे

छात्रों ने जन्तर मन्तर पर लाठीचार्ज चार्ज के विरोध में किया प्रदर्शन

पेपर लीक के लिए शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ही जिम्मेदार

भिवानी। दिल्ली में लाठीचार्ज के विरोध में नारेबाजी करते हुए। फोटो : हरिभूमि

- छात्रों ने आमरण अनशनकारी सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को रिहा करने की मांग की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

छात्र संगठन एसएफआई की ओर से गांव बामला की होलीवाली परस में जन्तर मन्तर दिल्ली में छात्रों पर बर्बर लाठीचार्ज की कड़ी निंदा करते हुए केंद्र सरकार के विरोध में प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन का नेतृत्व बामला गांव की एसएफआई छात्र नेता कीर्ति ग्रेवाल ने किया।

इस दौरान दर्जनों युवा छात्र छात्राएं शामिल हुए। उन्होंने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि नीट यूजी व अन्य अधिकतम परीक्षाओं के पेपर लीक होना केंद्र व राज्य सरकारों के लिए बहुत ही निंदनीय है और केंद्र सरकार की एजेसी एनटीए ने अपनी जिम्मेवारी ठीक तरह से नहीं निभाई। परिणामस्वरूप दर्जनों नीट यूजी के छात्रों ने निराश होकर आत्महत्या करने पर मजबूर होना पड़ा। इसके लिए केंद्र सरकार व उसके केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान मुख्य रूप से जिम्मेदार है। इसलिए दिल्ली में छात्र इकठ्ठे होकर उसकी बर्खास्गी की मांग कर रहे हैं लेकिन सरकार करोड़ो छात्रों की इस मांग पर ध्यान देने की बजाए उनको लाठी डंडों से पीट रही है। सरकार की इस कायराना हरकत को देश के छात्र कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि नीट यूजी के जिन छात्रों ने मजबूर होकर आत्महत्या की है, उनके प्रत्येक अभिभावकों को एक करोड़ रुपया केंद्र सरकार मुआवजा दे तथा एनटीए को भंग करके उसकी जगह निष्पक्ष, पारदर्शी परीक्षा प्रणाली की व्यवस्था करे ताकि भविष्य में इस तरह कोई पेपर लीक ना हो। उन्होंने इस पूरे प्रकरण की उच्च स्तरीय न्यायिक जांच करवाते हुए दोषियों को कड़ी सजा दिलवाने की भी मांग की। छात्रों ने आमरण अनशनकारी सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को रिहा करते हुए उनसे तथा आंदोलनकारी नेतृत्व से बातचीत करके छात्रों की समस्याओं का समाधान करने की भी मांग की है।

ये रहे मौजूद

प्रदर्शन में छात्रा प्राची, साक्षी जांगड़ा, कनक जांगड़ा, स्नेह शर्मा, तानिश जांगड़ा, रेनू ग्रेवाल, सीमा रोहिला, किरण रोहिल्ला, आशु रोहिल्ला, छात्र विकास, सन्नी , सावन , आकाश , . कुनाल , जोगेद्र शामिल थे । इस अवसर पर छात्र नेता अभिषेक शर्मा , सुमित बराड़ , युवा नेता हवा सिंह, कामरेड ओम प्रकाश , सीटू नेता धर्मबीर बामला , किसान नेता सतीश ग्रेवाल शामिल थे ।

युवाओं पर लाठीचार्ज बंद करे प्रशासन शिक्षा मंत्री दें इस्तीफा : गोठड़ा

लोहारू। कांग्रेस पार्टी के ग्रामीण जिला उपाध्यक्ष करण सिंह गोठड़ा ने विद्यार्थियों पर हुए पुलिस लाठीचार्ज की कड़ी निंदा करते हुए भाजपा सरकार और प्रशासन पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार लोकतांत्रिक तरीके से अपनी मांग रखने वाले युवाओं और बेटियों की आवाज दबाने का प्रयास कर रही है, जो लोकतंत्र के लिए उचित नहीं है। करण सिंह गोठड़ा ने आज यहां जारी प्रेस बयान में कहा कि शांतिपूर्ण आंदोलन कर रहे विद्यार्थियों पर पुलिस द्वारा बल प्रयोग करना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण और निंदनीय है। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदेश सरकार तानाशाही रवैया अपनाकर युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ कर रही है। यदि छात्र अपनी शिक्षा और अधिकारों को लेकर आवाज उठा रहे हैं तो सरकार को उनकी बात सुननी चाहिए, न कि उन पर लाठियां बरसानी चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा मंत्री नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार करते हुए तत्काल अपने पद से इस्तीफा दें और विद्यार्थियों से सार्वजनिक रूप से माफी मांगें। साथ ही सरकार पुलिस कार्रवाई की निष्पक्ष जांच कर दोषी अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करे। गोठड़ा ने चेतावनी दी कि यदि विद्यार्थियों की मांगों की अनदेखी और दमनकारी रवैया जारी रहा तो कांग्रेस पार्टी युवाओं के साथ मिलकर लोकतांत्रिक तरीके से व्यापक आंदोलन करेंगी, जिसकी पूरी जिम्मेदारी प्रदेश सरकार और प्रशासन की होगी।

चरखी दादरी। उपायुक्त कार्यालय में ज्ञापन सौंपते हुए। फोटो : हरिभूमि

लाठीचार्ज के विरोध में सीआईटीयू की जिला कार्यकारिणी ने प्रदर्शन किया

चरखी दादरी। नई दिल्ली के जंतर-मंतर पर नीट परीक्षा पेपर लीक और अन्य मांगों को लेकर प्रदर्शन कर रहे युवाओं पर पुलिस द्वारा किए गए लाठीचार्ज के विरोध में मंगलवार को सीआईटीयू की जिला कार्यकारिणी ने प्रदर्शन किया। जिला प्रधान राजकुमार धिकाड़ा के नेतृत्व में सीआईटीयू व विभिन्न यूनियनों से जुड़े कार्यकर्ता स्थानीय लघु सचिवालय पहुंचे और उपायुक्त कार्यालय के माध्यम से राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज को अमानवीय बताते हुए इसकी निंदा की गई। संगठन ने कहा कि युवाओं की लोकतांत्रिक तरीके से अपनी बात रखने की आवाज को बलपूर्वक दबाने का प्रयास किया गया है, जो उनके अधिकारों का उल्लंघन है। सह संयोजक कमलेश भैरवी ने केंद्र सरकार से युवाओं की मांगों का शीघ्र समाधान करने की अपील की। साथ ही केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को पद से हटाने की मांग भी उठाई गई। ज्ञापन में सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक के अनशन के दौरान अपनाए गए सरकारी रवैये पर भी आपत्ति जताई गई और इसे मानवीय अधिकारों के विपरीत बताया गया। प्रदर्शन में ओमवीर कालेहर, जयवीर चाहर, ओम नंबरदार, रणसिंह धिकाड़ा, पूर्व सरपंच राजकरण, सुरेश खेड़ी बूरा आदि मौजूद रहे।

छात्रों पर लाठीचार्ज लोकतंत्र के खिलाफ नीट मामले की सीबीआई जांच हो : सूबे सिंह

चरखी दादरी। इंडियन नेशनल लोकदल के जिला अध्यक्ष सूबे सिंह अटेला ने पार्टी नेताओं के साथ संयुक्त बयान जारी कर नीट पेपर लीक मामले को लेकर दिल्ली के जंतर-मंतर से संसद तक प्रदर्शन कर रहे छात्रों पर पुलिस लाठीचार्ज की निंदा की। उन्होंने कहा कि शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे छात्रों पर बल प्रयोग लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है और सरकार का छात्र विरोधी रवैया दर्शाता है। उन्होंने आरोप लगाया कि नीट यूजी 2026 की मूल परीक्षा के बाद री-एग्जाम में भी अनियमितताओं की शिकायतें सामने आई हैं। कई छात्रों ने ओएमआर शीट, प्राप्त अंकों और ऑल इंडिया रैंक में गड़बड़ी के आरोप लगाए हैं। इनेलो नेताओं ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को पद से हटाकर पूरे नीट प्रकरण की सीबीआई जांच कराने, प्रभावित छात्रों को न्याय दिलाने तथा लाठीचार्ज के लिए जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। संयुक्त बयान जारी करने वालों में जिला प्रभारी ओमप्रकाश गौरा, आर्य उद्यम सिंह उमरवास, जय भगवान ठेकेदार, रणबीर सिंह मंढोला, राकेश कुमार, बबलू श्योराण, अभिषेक फौगाट, रविन्द्र फौगाट और राहुल सांगवान बादल शामिल रहे।

भाजपा सरकार प्रदेश के समान विकास के लिए प्रतिबद्धः जय सिंह

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

सीएम नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश में चंहुमुखी विकास हो रहा

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, पूर्व राज्यसभा सांसद किरण चौधरी और महिला एवं बाल विकास व सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार भिवानी सहित पूरे प्रदेश के चौमुखी और समान विकास के लिए पूरी निष्ठा से समर्पित है।

भिवानी में मेडिकल कॉलेज का उद्घाटन और जींद से देश की पहली हाइड्रोजन ट्रेन का संचालन इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि हरियाणा विकास के एक नए युग में प्रवेश कर चुका है। यह विचार वरिष्ठ भाजपा नेता जय सिंह वाल्मीकि ने प्रेस बयान जारी करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने सरकार की जनहितैषी नीतियों और भिवानी को मिली ऐतिहासिक सौगातों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। वरिष्ठ भाजपा नेता जय सिंह वाल्मीकि ने कहा कि भिवानी में मेडिकल कॉलेज की स्थापना यहां के चिकित्सा क्षेत्र के लिए एक बहुत बड़ा वरदान साबित होगी। अब यहाँ के मरीजों को गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए रोहतक, दिल्ली या अन्य बड़े शहरों का रुख नहीं करना पड़ेगा।

समृद्ध परंपराएं एवं आपसी भाईचारा ग्रामीण अंचल की ताकतः मंजू मुन्नी

चरखी दादरी। ग्रामीण अंचल में सामाजिक और पारंपरिक संस्कारों की छटा उस समय और भी सुखद हो गई, जब भिवानी-महेंद्रगढ़ क्षेत्र से लोकसभा सांसद धर्मबीर सिंह की पत्नी मंजू मुन्नी देवी गांव कुब्जानगर पहुंची। पूर्व सरपंच नरेंद्र के सुपुत्र नितिन के विवाह पूर्व पारंपरिक बान-तेल समारोह में पहुंचकर मंजू मुन्नी देवी ने न केवल मांगलिक रस्मों में हिस्सा लिया, बल्कि वर नितिन के सिर पर हाथ रखकर उन्हें सुखद, समृद्ध और मंगलमय वैवाहिक जीवन का आशीर्वाद दिया। समारोह के दौरान सांसद धर्मबीर सिंह की पत्नी मंजू मुन्नी का ग्रामीण परंपराओं के अनुसार परिजनों एवं गांव की महिलाओं ने गर्मजोशी से स्वागत किया। मांगलिक गीतों और पारंपारिक गीतों के बीच पूरे गांव में उत्सव जैसा माहौल बना रहा, जहां सभी ने वर-वधू के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने घर-परिवार के सदस्यों और बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों से आत्मीय मुलाकात की तथा सभी का कुशलक्षेम जाना। मंजू देवी ने कहा कि हमारे ग्रामीण अंचल की सबसे बड़ी ताकत हमारी समृद्ध परंपराएं और आपसी भाईचारा हैं। बान-तेल केवल एक रस्म नहीं, बल्कि पूरे गांव के एक-दूसरे से जुड़ने और खुशियां बांटने का पावन जरिया है।

अवैध स्कूलों की मनमानी बच्चों व अभिभावकों पर भारी

बवानीखेड़ा। बवानीखेड़ा क्षेत्र में संचालित कुछ कथित अवैध एवं बिना मान्यता प्राप्त निजी स्कूलों की मनमानी अब बच्चों और अभिभावकों के लिए चिंता का विषय बनती जा रही है। बताया जाता है कि कई स्कूल शिक्षा विभाग के नियमों को दरकिनार कर बच्चों की सुरक्षा से खिलवाड़ कर रहे हैं, जबकि संबंधित विभाग की ओर से अभी तक कोई ठोस कार्रवाई देखने को नहीं मिली है। हालांकि खंड शिक्षा अधिकारी स्पष्ट कर चुके हैं कि लिखित में शिकायत आने पर तुरंत कार्यवाही की जाएगी। स्थानीय लोगों का कहना है कि कई स्कूलों में बच्चों को लाने-ले जाने के लिए ऐसे वाहनों का उपयोग किया जा रहा है जो न तो सुरक्षा मानकों पर खरे उतरते हैं और न ही परिवहन नियमों का पालन करते हैं। कई वाहन बिना नंबर प्लेट के सड़कों पर दौड़ रहे हैं, जबकि कुछ वाहन तकनीकी रूप से कंडम होने के बावजूद स्कूली बच्चों की ढुलाई में लगे हुए हैं। बताया जाता है कि ढुंढ़वा जोहड़ के पास भी बिना मान्यता के स्कूलों द्वारा भी जमकर विभाग के आदेशों की अवेहना की जा रही है। जो विभाग के किसी भी कोरम को पूरा नहीं करते हुए दिखाई देते। अभिभावकों का आरोप है कि बच्चों की सुरक्षा को नजरअंदाज कर अधिक संख्या में विद्यार्थियों को वाहनों में बैठाया जाता है, जिससे दुर्घटना की आशंका बनी रहती है।

न्यूज डायरी

राजीव गांधी गौरव अवार्ड से सम्मानित होंगे पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी जय प्रकाश सभ्रवाल

चरखी दादरी। दादरी के पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी जय प्रकाश सभ्रवाल को शिक्षा, समाज सेवा एवं जनहित के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए 23 अगस्त 2026 को नई दिल्ली में आयोजित होने वाले समारोह में राजीव गांधी गौरव अवॉर्ड से सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान अंतरराष्ट्रीय समरसता मंच की ओर से भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी की जयंती समापन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रदान किया जाएगा। मंच की चयन समिति ने सभ्रवाल का चयन शिक्षा के क्षेत्र में उनके दीर्घकालिक योगदान, सामाजिक सरोकारों और जनहित से जुड़े कार्यों के आधार पर किया है। समारोह में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली देशभर की लगभग 85 विशिष्ट प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों के करकमलों से सम्मान प्रदान किया जाएगा।

फसल अवशेष प्रबंधन मशीनों पर 50 प्रतिशत अनुदान के लिए आवेदन आमंत्रित

चरखी दादरी। उपायुक्त मनदीप कौर ने जिले के किसानों का आह्वान किया है कि वे फसल अवशेषों के वैज्ञानिक एवं पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा संचालित योजना का अधिकतम लाभ उठाएं। वर्ष 2026-27 के दौरान राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के क्रॉप रेजिड्यू मैनेजमेंट घटक के अंतर्गत किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीनों की खरीद पर 50 प्रतिशत अनुदान प्रदान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इच्छुक किसान कृषि विभाग के आधिकारिक पोर्टल एग्रीहरियाणा.जीओवी.आईएन पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। आवेदन करने की अंतिम तिथि 03 अगस्त निर्धारित की गई है। उन्होंने किसानों से अपील की है कि वे अंतिम तिथि की प्रतीक्षा किए बिना समय रहते आवेदन करें, ताकि किसी प्रकार की तकनीकी असुविधा से बचा जा सके। व्यक्तिगत श्रेणी में एक परिवार पहचान पत्र से केवल एक किसान का ही चयन किया जाएगा तथा एक किसान केवल एक मशीन के लिए आवेदन कर सकेगा। अनुदान भी केवल एक ही मशीन पर देय होगा। हालांकि यदि किसी किसान का चयन स्ट्रॉ बेलर के लिए होता है तो उसे स्ट्रॉ रैक तथा रोटरी स्लेशर/श्रबमास्टर खरीदने की भी अनुमति होगी।

सर्वम इंस्टीट्यूट में प्रतिभाशाली विद्यार्थी और उनके अभिभावकों को किया सम्मानित

चरखी दादरी। भगवान परशुराम चौक के समीप स्थित सर्वम इंस्टीट्यूट में मेधावी विद्यार्थियों के सम्मान में समारोह आयोजित किया गया। संस्थान में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता हासिल करने वाले विद्यार्थियों के साथ उनके अभिभावकों को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में निदेशक विक्रांत शर्मा ने बताया कि मोरवाला निवासी कर्मवीर की पुत्री रश्मि धनखड़ ने री-नीट परीक्षा में 720 में से 625 अंक प्राप्त कर ऑल इंडिया रैंक 4229 हासिल की। रावलधी निवासी केशव की पुत्री रिद्धि ने 720 में से 574 अंक अर्जित कर ऑल इंडिया रैंक 21043 प्राप्त की। गांव स्वरूपगढ़ निवासी सिमरन ने जेईई मेन्स परीक्षा उत्तीर्ण कर संस्थान का नाम रोशन किया। साथ ही हिमांशी और सक्षम ने एनडीए की लिखित परीक्षा पास कर उल्लेखनीय सफलता हासिल की।

छात्रा मोहिनी को किया सम्मानित

चरखी दादरी। गांव चरखी स्थित ग्रीन मीडोज वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में मंगलवार को सम्मान समारोह आयोजित कर जेईई मेन्स और नीट परीक्षा पहले ही प्रयास में उत्तीर्ण करने वाली छात्रा मोहिनी पुत्री जसबीर को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य सुरेश सांगवान ने की। विद्यालय परिवार ने मोहिनी का फूलमालाओं से स्वागत किया, मिठाई खिलाकर सम्मान जताया और उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

अव्यवस्थाओं की शिकायत सीएम विंडो को भेजी

भिवानी। सैनी विचार मंच इंडिया के राष्ट्रीय संयोजक एवं सामाजिक कार्यकर्ता सुरेश सैनी ने चौ. बंसीलाल सामान्य अस्पताल, भिवानी में आयु सत्यापन प्रक्रिया के दौरान सामने आई अव्यवस्थाओं, कर्मचारियों की कार्यप्रणाली तथा आमजन को हो रही परेशानियों को लेकर सीएम विंडो एवं उपायुक्त भिवानी को शिकायत भेजकर पूरे मामले की निष्पक्ष जांच और दोषी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विरुद्ध कार्रवाई की मांग की है। सुरेश सैनी ने बताया कि 13 जुलाई को वह अपने परिवार के गांव ढाणी खुशहाल के दो बच्चों का आयु सत्यापन प्रमाणपत्र बनवाने के लिए अस्पताल पहुंचे थे। इस दौरान एक्स-रे की पर्ची पीजीआई परिसर में बनाई गई, जबकि एक्स-रे सामान्य अस्पताल में कराया गया। इससे उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक बार-बार भटकना पड़ा। एक्स-रे विभाग में भी कोई सुव्यवस्थित व्यवस्था नहीं थी।

ब्राह्मण समाज सामाजिक कल्याण समिति ने रामफल शर्मा का किया अभिनंदन

भिवानी। ब्राह्मण समाज सामाजिक कल्याण समिति की बैठक मंगलवार को सभा कार्यालय में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता कल्याण समिति के प्रधान एडवोकेट सुनील कुमार शर्मा ने की। कार्यक्रम के दौरान सामाजिक और जनकल्याणकारी कार्यों को आगे बढ़ाने तथा संगठन को मजबूती देने के संबंध में गहन विचार-विमर्श हुआ। बैठक के दौरान श्यामधाम धारेडू के प्रधान रामफल शर्मा को विशेष रूप से सम्मानित किया। समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने उन्हें स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर अनिल अत्री, संतोष शर्मा, रोहतास शर्मा, प्रवेश शर्मा सचिव, बीरबल शर्मा, अरविंद ढिल्लु बामलिया, संजय मिश्रा, मास्टर प्रेम, विजय शर्मा पूर्व सरपंच के अलावा 12 खाप ब्राह्मण के प्रधान सहित अनेक सम्मानित सदस्य उपस्थित रहे। प्रधान सुनील ने समाज के मुख्य उद्देश्यों पर प्रकाश डाला और उपस्थित सभी सदस्यों को आश्वस्त किया कि संस्था हमेशा समाजहित व जनकल्याणकारी कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेगी।

विज्ञान एवं नवाचार प्रदर्शनी में एपीएस स्कूल रहा द्वितीय

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

दादरी के आर्यन्स मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में आयोजित टसल 13.0 विज्ञान एवं नवाचार प्रदर्शनी में प्रेम नगर स्थित एपीएस सीनियर सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विद्यार्थियों की इस उपलब्धि से विद्यालय परिवार में खुशी का माहौल है। प्रतियोगिता में विद्यालय की कक्षा 12 (नॉन मेडिकल) के विद्यार्थियों गीताक्षी एवं शिवांशु ने अपने अभिनव विज्ञान मॉडल का प्रदर्शन किया। मॉडल की वैज्ञानिक अवधारणा, मौलिकता और उपयोगिता ने निर्णायक मंडल को प्रभावित किया, जिसके आधार पर विद्यार्थियों को द्वितीय स्थान से सम्मानित किया गया। विद्यालय प्रबंधन ने बताया कि इस सफलता के पीछे विद्यार्थियों की मेहनत, विज्ञान विभाग के शिक्षकों का सहयोग और मेंटर शिक्षक नकुल का मार्गदर्शन महत्वपूर्ण रहा। उनके निर्देशन में विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मक क्षमता और वैज्ञानिक सोच का बेहतर प्रदर्शन किया।

सीबीएस स्कूल के विद्यार्थियों ने अपनी पॉकेट मनी से लगाए पौधे

चरखी दादरी। मोड़ी स्थित सीबीएस मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में पर्यावरण संरक्षण और हरियाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विद्यालय की स्कॉलर कक्षा के विद्यार्थियों ने स्कूल परिसर में पौधरोपण्स किया। इस अभियान की विशेषता यह रही कि पौधों की खरीद के लिए आवश्यक राशि विद्यार्थियों ने अपनी पॉकेट मनी से एक-एक रुपया एकत्र कर जुटाई। इसके माध्यम से विद्यार्थियों ने पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी और सेवा-भाव का परिचय दिया। अभियान के तहत विद्यार्थियों ने अपनी कक्षा की ओर से पांच पौधे लगाए तथा उनके संरक्षण और नियमित देखभाल का संकल्प भी लिया। इस अवसर पर विद्यालय के निदेशक डॉ. सुरेश सोलंकी, डॉ. नरसिंह चाहर, प्राचार्य बिजेंद्र सिंह आदि मौजूद रहे।

चंद्रशेखर आजाद ओपन ग्रुप तीन साल निरंतर चला रहा नशामुक्ति जनजागरूकता अभियान

नशामुक्त एवं सशक्त युवा ही विकसित भारत के सपने को कर सकते साकार: बीईओ गिल

- ग्रुप कोऑर्डिनेटर लक्ष्मण गौड़, ग्रुप लीडर सागर सज्जन सिंह ने बीईओ को मुख्यमंत्री का जागरूकता संदेश पत्र सौंपा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

बीईओ महेंद्र सिंह को मुख्यमंत्री नायब सिंह का संदेश पत्र सौंपते ग्रुप कोऑर्डिनेटर लक्ष्मण गौड़, ग्रुप लीडर सागर व अमित कुमार।

दा हरियाणा राज्य भारत स्काउट्स एण्ड गाइड्स चंद्रशेखर आजाद ओपन ग्रुप जिला भिवानी के ग्रुप कोऑर्डिनेटर लक्ष्मण गौड़, ग्रुप लीडर सागर सज्जन सिंह एवं सहग्रुप लीडर अमित कुमार खंड शिक्षा अधिकारी महेंद्र कुमार गिल के कार्यालय पहुंचे और महत्वपूर्ण बैठक की। बैठक के दौरान चंद्रशेखर आजाद ओपन ग्रुप के पदाधिकारियों ने नशामुक्ति अभियान एवं सामाजिक जागरूकता गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा की। इस दौरान ग्रुप कोऑर्डिनेटर लक्ष्मण गौड़, ग्रुप लीडर सागर सज्जन सिंह एवं सहग्रुप लीडर अमित ने बीईओ महेंद्र गिल को मुख्यमंत्री का जागरूकता संदेश पत्र सौंपा।

ग्रुप कोऑर्डिनेटर लक्ष्मण गौड़ व ग्रुप लीडर सागर ने बताया कि राज्यपाल प्रोफेसर अशिम कुमार घोष, मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, शिक्षामंत्री महिपाल ढांडा, उपायुक्त साहिल गुप्ता, जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. निर्मला दहिया व ग्रुप के अध्यक्ष पूर्वमंत्री एवं विधायक घनश्यामदास सर्राफ के कुशल मार्गदर्शन में गत 17 मार्च से 17 अप्रैल तक पूरे प्रदेश में नॉन स्टॉप हरियाणा, स्वच्छ हरियाणा, स्वस्थ हरियाणा, नशामुक्त हरियाणा, सशक्त युवा, शिक्षित युवा– विकसित भारत अभियान के अंतर्गत व्यापक जनजागरूकता कार्यक्रम चलाए गए। अभियान की विस्तृत रिपोर्ट खंड शिक्षा अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत की गई।

रिपोर्ट का अवलोकन करने के पश्चात बीईओ महेंद्र कुमार गिल ने चंद्रशेखर आजाद ओपन ग्रुप द्वारा जिला भिवानी एवं पूरे हरियाणा में किए जा रहे सामाजिक कार्यों, स्काउट-गाइड गतिविधियों तथा नशामुक्ति अभियान की सराहना की। गिल ने कहा कि नशामुक्त एवं सशक्त युवा ही विकसित भारत के सपने को साकार कर सकते हैं।

मेरी फसल-मेरा ब्योरा पोर्टल पर पंजीकरण 31 तक

चरखी दादरी। उपायुक्त मनदीप कौर ने कहा कि किसानों द्वारा अपने कृषि फसलों को मंडियों में बेचने तथा सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषि से संबंधित योजनाओं का लाभ उठाने के लिए फसलों का पंजीकरण मेरी फसल मेरा ब्योरा पोर्टल पर करवाना अनिवार्य है। आगामी 31 जुलाई तक किसान पोर्टल पर पंजीकरण करवा सकते हैं। उन्होंने किसानों का आह्वान किया की है कि वे फसल.हरियाणा. जीओवी.आईएन पोर्टल पर अपनी खरीफ की फसलों का पंजीकरण अवश्य करवाएं। इसको लेकर उपायुक्त ने कृषि विभाग के अधिकारियों को भी निर्देश दिए है कि वे जिला के किसानों को उक्त पोर्टल पर अपनी खरीफ की फसलों का पंजीकरण करवाने के लिए प्रेरित करें। किसानों को परिवार पहचान पत्र या आधार संख्या से जुड़े पंजीकृत मोबाइल नंबर पर ओटीपी प्राप्त होने के बाद ही फसल पंजीकरण होगा।

मां ही होती है पहली गुरु, संस्कारों की कमी से टूट रहे रिश्ते, अब रिश्तों में बढ़ रहा हस्तक्षेप

राकेश भटठी ⏭भिवानी

जीवन की सच्चाई ये हैं कि मां को हर मनुष्य और जीव की पहली गुरु माना जाता है, जो बच्चे को बोलना, चलना और जीवन की समझ सिखाती है। लेकिन यदि मां ही बच्चों को सही संस्कार देने की बजाय गलत राह दिखाने लगे तो यह समाज के लिए चिंता का विषय है।

आजाद नगर निवासी भतेरी देवी।

आजाद नगर निवासी 77 वर्षीय भतेरी देवी ने अपने पुराने संस्मरण साझा करते हुए बदलते सामाजिक परिवेश पर चिंता जताई।उन्होंने कहा कि पहले मां बेटियों को संस्कार, परिवार का सम्मान और रिश्तों की अहमियत समझाती थी, जिससे उनका वैवाहिक जीवन सुखमय रहता था। अब पाश्चात्य संस्कृति और दिखावे की होड़ के कारण संस्कार पीछे छूटते जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कई बार मां-बेटियों के बीच होने वाली बातचीत में ससुराल पक्ष के प्रति गलत सोच पैदा हो जाती है, जिसका असर परिवारों पर पड़ता है।

पाश्चात्य संस्कृति में फंसे युवा

भतेरी देवी ने बताया कि आज की युवा पीढ़ी हरियाणवी संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध में फंसती जा रही हैं, खान-पान व संस्कारों में भयंकर गिरावट आ गई हैं। आज घरों में वार-त्योहार, अमावस्या पर खीर, हलवा, लड्डू प्रसाद, दूध, दही व घी को युवा पीढ़ी मुंह तक नहीं लगाती, उन्हें बाजार का चाऊमिन, गोल गप्पे व बर्गर दिन में चाहे दस बार खिला दो, उन्हें वो ज्यादा पसंद हैं। पहले बहुएं या महिलाएं हर छह माह में मायके जाती थी और जूती-चप्पल व कपड़े लेकर आती थी, क्योंकि उन्हें ससुराल से ये सब मंगवाने की इजाजत नहीं थी, आज दिनभर फोन पर बातचीत चलती हैं और दूसरे-चौथे दिन मायके पहुंच जाती हैं। एक बार की बात हैं कि मुझे मायके जाए आठ माह हो गए थे और मेरी चप्पल टूट गई, तभी मेरा भाई मुझे लेने आ गया। मैं मेरे भाई के साथ टूटी चप्पल पहनकर पैर को घसीटती हुई बस अड्डे तक गई और बस में बैठ गई, फिर शहर आने पर टूटी चप्पल को फेंका और भाई ने मुझे वहां से नई चप्पल दिलवाई। घर पहुंचने पर भाई ने सारी बात पिताजी को बताई, तब पिता ने कहा कि बेटा बेटी भतेरी ससुराल से आए या न आए हर छह माह बाद बेटी की चप्पल, जूती व कपड़े जरूर देकर आने हैं। पहले बेटी ससुराल के लिए विदा होती थी तो बेटी-बटेऊ को विदाई स्वरूप एक-एक रुपया मिलता था, लेकिन आज रुपयों ने मान-सम्मान घटा दिया हैं।

घर के 12 सदस्यों को हाथ की चक्की पर अनाज पीसकर चूल्हे पर बनाकर खिलाती थी रोटियां

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

आज की बहुएं सास के सामने जुबां लड़ाने लगती हैं और वो सास का सम्मान भी नहीं करती, लेकिन पहले खुद खाना डालकर खाने की हिम्मत नहीं होती थी, सास अपनी मर्जी से खाना डालकर देती थी और वो भी घर के सभी सदस्य खाना खाने के बाद ही खाना मिलता था, अब समय बिल्कुल विपरीत हो गया हैं। पहले घर के 12 सदस्यों को हाथ की चक्की पर प्रतिदिन पांच से छह किलो अनाज पीसकर रोटियां बनाकर खिलाती थी और पशुओं के लिए दलियां व चून भी पीसती थी, आज सभी कुछ ऑटोमैटिक सिस्टम से चलता हैं, फिर भी सभी परेशान रहते हैं। आज लाइट जाते ही सभी काम रूकी घड़ी के समय की तरह रूक जाते हैं, उक्त पुराने संस्मरण 80 वर्षीय हालुवास गेट बाबा जहरगिरी कॉलोनी निवासी प्रेम देवी ने सांझा किए अपने अनुभव। पहले भाई-बहन की शादी में आंगन लीपा जाता था।

हालुवास गेट बाबा जहरगिरी कॉलोनी निवासी प्रेम देवी।

बदलते खान-पान पर चिंता, बोलीं- सुविधाएं बढ़ीं, स्वाद और सेहत घटी

प्रेम देवी ने बताया कि पहले घरों में हरे चने, कोंद्रा, बथुवा व चुलाई की सब्जियां बनती थी और सिलवट्टे पर लाल मिर्च की बिल्कुल लाल चटनी, जिसका जबरदस्त स्वाद होता था, लेकिन अब मिक्सी ने पूरे स्वाद का नाश कर दिया हैं और घरों में तीनों समय अलग-अलग सब्जियां बनती हैं और काफी घरों में तो दो-दो सब्जियां भी बनती हैं, जो रुपयों की बर्बादी हैं। पहले सब्जी न होने पर लस्सी में नमक व मिर्च की चुटी डालकर रोटी खा लेते थे, अब तीनों समय सब्जियां नहीं मिलने पर घरों में कलह होती हैं या फिर बाहर से ऑर्डरों पर खाना आता हैं। अब घरों में आरओ सिस्टम लगे हुए हैं, जिसमें पानी पीने का कोई स्वाद नहीं आता, जबकि पहले हैंडपंप, नल व नाली का पानी पी लेते थे और मस्त रहते थे या फिर घड़ों का पानी पीते थे तो बीमारियों से कोसों दूर थे, लेकिन अब जो सामान बच जाता हैं, सारा फ्रिज में रख देते हैं, जिससे उसकी ताकत और तासीर खराब हो जाती हैं, वह बेस्वाद हो जाता हैं। पहले उखल-मुसल से बाजरे की खिचड़ी कूटते थे और लस्सी, मिर्च व लहसुन की गोजी को डूंगार लगाकर खाते थे, जो बहुत ही स्वादिस्ट होती थी, लेकिन आज मिक्सी में ही सब काम होते हैं, जिसका कोई स्वाद नहीं हैं, बस पेट भरना ही रह गया हैं। अब बच्चे घी, दूध, लस्सी, दही व मीठा खाना पसंद नहीं करते, बाजार का चाऊमिन, इडली-डोसा, बर्गर व मोमौज खाना खाते हैं, जो बीमारियां लेकर आते हैं।

खबर संक्षेप

न्यायमूर्ति बालाकृष्णन बने एबीएचआरओ के आजीवन सदस्य

भिवानी। देश से नशा जैसी बुराई को जड़ से मिटाने और युवाओं को नई दिशा देने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे अखिल भारतीय मानवाधिकार संगठन (एबीएचआरओ) को बहुत बड़ा वैचारिक और रणनीतिक संबल मिला है। भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश एवं राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के पूर्व अध्यक्ष न्यायमूर्ति केजी बालाकृष्णन एबीएचआरओ के आजीवन सदस्य बन गए हैं। एबीएचआरओ की केंद्रीय व प्रांतीय कार्यकारिणी के शीर्ष पदाधिकारी विशेष रूप से उपस्थित रहे, जिनमें राष्ट्रीय महासचिव एचएस तंवर, महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष एवं पूर्व डीजीपी निर्मल कौर, संगठन सचिव डॉ. रूपिंद्र कौर माकन है।

शिविर में 50 युवाओं ने किया रक्तदान

लोहारू। सामाजिक संगठन जीवन एक वरदान फाउंडेशन द्वारा स्थानीय हारट्रोन कंप्यूटर सेंटर में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी की कुलपति प्रो. दीप्ति धर्माणी ने बतौर मुख्य अतिथि किया। शिविर में 50 युवाओं ने रक्तदान कर समर्पण भावना का परिचय दिया है। शिविर में मंजीत गिगनाऊ, राजेश सहित अनेक युवाओं ने रक्तदान किया तथा रक्तदाताओं प्रशस्ति प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। रक्तदान कर किसी जरूरतमंद की जान बचाई जा सकती है।

भीम स्टेडियम में खेलों का आगाज

बेसबॉल में तिगड़ाना और घुसकानी की टीमों ने हासिल किया पहला स्थान

- एथलेटिक्स, योगा सहित विभिन्न स्पर्धाओं में खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। बालिकाओं का परिचय लेकर मैच शुरू करवाती प्राचार्या रीमा परमार। फोटो : हरिभूमि

भीम स्टेडियम में मंगलवार से शुरू हुई दो दिवसीय खेल प्रतियोगिता के पहले दिन खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में साफ्टबॉल की अंडर-14, अंडर-17 और अंडर-19 आयु वर्ग में वीर शहीद कैप्टन ओपी दलाल राजकीय उच्च विद्यालय घुसकानी की टीमों ने विजेता बनकर अपना दबदबा कायम किया। वहीं बेसबॉल प्रतियोगिता के अंडर-19 वर्ग में तिगड़ाना तथा अंडर-14 और अंडर-17 वर्ग में घुसकानी की टीमों ने पहला स्थान हासिल किया।खंड शिक्षा अधिकारी महेंद्र गिल के दिशानिर्देशों में आयोजित प्रतियोगिता का शुभारंभ प्राचार्या रीमा परमार ने बालिका खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर किया। उन्होंने खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाते हुए खेलों को जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बताया।प्रतियोगिता में एथलेटिक्स की विभिन्न स्पर्धाओं में भी खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। अंडर-17 की 100 मीटर दौड़ में जीएचएस नंगाल की उषा प्रथम, बीपीएस भिवानी की मानवी द्वितीय और जीजीएसएसएस देवसर की दिव्या तृतीय रहीं। अंडर-19 वर्ग में पीएसआरएस एसएस भिवानी की साक्षी ने पहला स्थान हासिल किया।200 मीटर अंडर-17 में हलवासिया स्कूल की वामिका ने बाजी मारी, जबकि देवसर की दिव्या दूसरे और दिनोद की सावना तीसरे स्थान पर रहीं। अंडर-19 वर्ग में रेड रोज स्कूल घुसकानी की वंशिका प्रथम रहीं। 400 मीटर दौड़ में भी वामिका ने पहला स्थान प्राप्त किया। अंडर-19 में वंशिका ने जीत दर्ज की।800 मीटर दौड़ में दिनोद की आरती और अंडर-19 वर्ग में तिगड़ाना की योगिता प्रथम रहीं। 1500 मीटर अंडर-17 में दिनोद की मंजू और अंडर-19 में तन्नू ने पहला स्थान हासिल किया। क्रॉस कंट्री 3 किलोमीटर में डीडब्ल्यूपीएस भिवानी की नेहल विजेता रहीं। फील्ड स्पर्धाओं में ट्रिपल जंप, हाई जंप, पोल वॉल्ट, हर्डल और हैमर थ्रो में भी खिलाड़ियों ने प्रतिभा दिखाई। ट्रिपल जंप में देवसर की साक्षी, हाई जंप में उत्तमी बाई स्कूल की गुंजन, पोल वॉल्ट में गुंजन और हैमर थ्रो में रेड रोज स्कूल घुसकानी की साक्षी ने पहला स्थान प्राप्त किया।योग प्रतियोगिता में अंडर-11 वर्ग में केएमपीएस भिवानी की मौलिका प्रथम रहीं, जबकि अंडर-17 वर्ग में वीएचएस हनुमान ढाणी की मानवी ने बाजी मारी। प्रतियोगिता का आयोजन जिला खेल अधिकारी विद्यानंद, नोडल अधिकारी सत्यवान कोच और जोनल सचिव की देखरेख में अनुशासित और व्यवस्थित तरीके से कराया जा रहा है।

खेल स्वस्थ शरीर के साथ अनुशासन भी सिखाते हैं

खंड शिक्षा अधिकारी महेंद्र गिल ने कहा कि खेल न केवल हमारे शरीर को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि जीवन में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और विपरीत परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने की सीख भी देते हैं। भिवानी की बेटियों ने हमेशा से ही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश व प्रदेश का नाम रोशन किया है। उन्होंने बताया कि अंडर-11 से लेकर अंडर-19 तक की बालिकाओं के लिए आयोजित यह प्रतियोगिता हमारी जमीनी स्तर की प्रतिभाओं को तराशने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। शिक्षा के साथ-साथ खेलों का यह संगम बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बेहद आवश्यक है। जिला खेल अधिकारी विद्यानंद की देखरेख में मैदान व्यवस्था और खेल नियमों का सख्ती से पालन कराया गया। नोडल अधिकारी सत्यवान कोच और जोनल सचिव मदनगोपाल की टीम ने खिलाड़ियों के पंजीकरण से लेकर मुकाबलों के संचालन तक हर स्तर पर उत्कृष्ट प्रबंधन का परिचय दिया।

दिनोद कन्या स्कूल की छात्राओं ने एथलेटिक्स में आठ स्वर्ण सहित जीते 14 पदक

भिवानी। भीम स्टेडियम में 21 जुलाई से 24 जुलाई तक होने वाली खंड स्तरीय स्कूली खेल प्रतियोगिता की एथलेटिक्स में दिनोद के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं ने आठ स्वर्ण पदक सहित 14 पदक जीतकर स्कूल, गांव व भिवानी ब्लॉक का नाम रोशन किया हैं। प्रतियोगिता में विद्यालय की 18 छात्राओं ने खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया, जिनमें से 14 छात्राओं ने पदक जीते। पदक विजेता छात्राओं ने अपनी जीत का श्रेय कोच, अभिभावकों, प्राचार्या सीमा कुमारी, पीटीआई सुनीता कुमारी व शिक्षक-शिक्षिकाओं को दिया। एथलेटिक्स प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करने पर प्राचार्या सीमा कुमारी, अंग्रेजी प्रवक्ता प्रसेन सिंह चौहान, सोनिया, विजय कुमार, सुरेंद्र सिंह, डीपीई संजय सैनी, पीटीआई सुनीता कुमारी, अनिल सैनी, लक्ष्मण गौड़, अमरजीत, मुकेशराज, त्रिलोक गांबा, पंकज कुमार, ममता पालीवाल, पिंकी जिंदल, रूचिका, लक्ष्मी रानी,

अन्नु रानी, मुकेश कुमारी, सरिता, सोनिया आदि ने पदक विजेता छात्राओं को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उल्लेखनीय हैं कि खंड स्तरीय स्कूली खेल प्रतियोगिता की एथलेटिक्स स्पर्धा में दिनोद के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की 18 छात्राओं ने प्रतिभागिता की, जिनमें से 14 छात्राओं ने अपनी खेल प्रतिभा एवं कौशल के दम पर आठ स्वर्ण पदक सहित 14 पदक जीते।

अंडर-19 कबड्डी में आदर्श विद्यालय मीरान की टीम ने मारी बाजी

तोशाम। सुरेंद्र सिंह खेल स्टेडियम में आयोजित लड़कियों के खंड स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में अंडर-19 आयु वर्ग कब्बडी प्रतियोगिता में आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मिरान की टीम ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय निगानां की टीम को हराकर बाजी मारी। खेलों का शुभारंभ खंड शिक्षा अधिकारी विजय सांगवान ने किया। विजय सांगवान ने कहा कि खंड सभी विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ साथ कोई ना कोई खेल जरूर अपनाना चाहिए। खेल प्रतियोगिताएं हमारे जीवन में शारीरिक फिटनेस, अनुशासन, और टीम भावना को बढ़ावा देने के साथ-साथ युवाओं में नेतृत्व और सकारात्मक प्रतिस्पर्धा के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। प्रतियोगिताओं के लिए की जाने वाली तैयारी युवाओं को अनुशासित और समय का पाबंद बनाती है। प्रतियोगिता के खो-खो के 14 वर्ष आयु वर्ग में पीएस नवयुग स्कूल तोशाम की टीम प्रथम, आदर्श वरिष्ठ

माध्यमिक विद्यालय मिरान की टीम ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। खो-खो के 11 व 17 आयु वर्ग में राजकीय उच्च विद्यालय पिंजोखरा की टीम प्रथम, आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मिरान की टीम दूसरे स्थान पर रही। खो-खो के 19 आयु वर्ग में मेगा माईंड स्कूल तोशाम की टीम प्रथम, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय छपार रांगडान की टीम दूसरे स्थान पर रही। 17 आयु वर्ग के 400 मीटर दौड़ में बाबा मुंगीपा बुशान की छात्रा तनुजा प्रथम रही।

बेटियों के हुनर ने एक बार फिर किया गौरवान्वित

भिवानी। प्रतिभा किसी पहचान की मोहताज नहीं होती और जब इसे सही मार्गदर्शन और दृढ़ संकल्प का साथ मिल जाए तो सफलता कदम चूमती है। कुछ ऐसा ही कर दिखाया है गांव खरक की होनहार बेटियों ने। हलवासिया विद्या विहार में मंगलवार को आयोजित हुई लड़कियों की खंड स्तरीय स्कूली खेल प्रतियोगिता में खरक गांव की बेटियों की हैंडबॉल टीम ने अपने शानदार खेल के दम पर प्रथम स्थान हासिल कर पूरे क्षेत्र का नाम रोशन किया है। मैच के दौरान खिलाड़ियों के बीच जबरदस्त उत्साह और तालमेल देखने को मिला। खरक की टीम ने शुरुआत से ही आक्रामक और रणनीतिक खेल का प्रदर्शन करते हुए विरोधी टीम पर बढ़त बनाए रखी और अंततः खिताबी जीत अपने नाम की। इस शानदार उपलब्धि पर विवेक खरकिया ने खुशी जाहिर करते हुए खिलाड़ियों के प्रदर्शन की सराहना की। उन्होंने कहा कि खरक की बेटियों की यह जीत उनकी कड़ी मेहनत,

दिन-रात के अभ्यास और खेल के प्रति अटूट समर्पण का परिणाम है। मैदान पर उनका तालमेल और आत्मविश्वास का स्तर काबिले-तारीफ था। यह केवल एक जीत नहीं है, बल्कि उन सभी ग्रामीण बेटियों के लिए एक प्रेरणा है जो खेल जगत में अपनी पहचान बनाना चाहती हैं। उन्हे पूरा विश्वास है कि ये खिलाड़ी आगे भी राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर बेहतरीन प्रदर्शन करेंगी।

जन आंदोलन समिति का धरना स्थगित

चरखी दादरी। शहर में बनी पेयजल समस्या को लेकर जन आंदोलन समिति ने मंगलवार को लाला लाजपत राय चौक पर धरना शुरू किया। धरना शुरू होने के बाद जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के कार्यकारी अभियंता सोहनलाल सहित अन्य अधिकारी मौके पर पहुंचे और समिति के पदाधिकारियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा विभिन्न वार्डों के प्रतिनिधियों से बातचीत की। विभाग की ओर से 31 जुलाई तक पेयजल व्यवस्था दुरुस्त करने का ठोस आश्वासन मिलने के बाद जन आंदोलन समिति ने फिलहाल धरना स्थगित करने का निर्णय लिया। धरना स्थल पर पहुंचे कार्यकारी अभियंता ने बताया कि दादरी शहर की पेयजल लाइनों की आवश्यक मरम्मत और सुधार कार्य प्राथमिकता के आधार पर पूरे करवाए जाएंगे। उन्होंने आश्वस्त किया कि तय समय सीमा तक लोगों को स्वच्छ और सुचारु पेयजल उपलब्ध करवाने के लिए विभाग पूरी गंभीरता से कार्य करेगा। पेयजल सुधार कार्यों की निगरानी और समीक्षा के लिए एक समिति का गठन किया जाएगा।

चरखीदादरी। छात्रा निधि को सम्मानित करते हुए जिला शिक्षा अधिकारी धर्मेंद्र चौधरी।

न्यायसंगत कार्य में नहीं होगी देरी: धूपड़

भिवानी। प्राइवेट स्कूल्स वेलफेयर हरियाणा ने टीआईटी सीनियर सेकेंडरी स्कूल में सम्मान समारोह आयोजित कर हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी के चेयरमैन शंकर धूपड़ को सम्मानित किया। समारोह में राज्य भर से आए स्कूल संचालक, डायरेक्टर, प्रिंसिपल, टीचर्स ओर प्राइवेट स्कूल वेलफेयर एसोसिएशन हरियाणा के सभी जिलों के अध्यक्ष, पदाधिकारी व एसोसिएशन की प्रदेश कार्यकारिणी के सभी सदस्य उपस्थित थे।मंच संचालन एसोसिएशन के भिवानी जिला महासचिव करण मिरग ने किया। समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई,इसके बाद विद्यांतरिक्ष सीनियर सेकेंडरी स्कूल भिवानी के विद्यार्थियों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। टीआईटी स्कूल की छात्रों ने सुंदर हरयाणवीं नृत्य प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया. समारोह के अपने स्वागत भाषण में एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष रामअवतार शर्मा ने शंकर धूपड़ को प्रदेश के प्राइवेट स्कूलों के परिवार का मुखिया, संरक्षक बताते हुऐ कहा कि व्यक्तिगत रूप से और एसोसिएशन के तौर पर भी उन्हें हमेसा उनका आशीर्वाद पिछले कई वर्षों से मिलता रहा है। बहुत वर्षों पहले एसोसिएशन की जब भिवानी में नींवं रखी गई थी तो उसकी पहली मीटिंग शंकर धूपड़ के स्कूल और उनके सानिध्य में ही आयोजित की गई थी।

लिटिल हार्ट्स में विद्यार्थियों को किया पॉक्सो के प्रति जागरूक

भिवानी। बाल यौन अपराध संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम, 2012 के प्रावधानों एवं निहितार्थों को लेकर मंगलवार को लिटिल हार्ट्स इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर 13 में विधिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। विद्यालय के एमडी डॉ. पवन गोयल व भावना गोयल ने बताया कि कार्यक्रम हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण पंचकूला के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भिवानी के तत्वावधान में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में बतौर मुख्यतिथि मुख्य जिला न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव पवन कुमार ने शिरकत की। इस अवसर पर जिला बाल संरक्षण अधिकारी नरेंद्र, पैनल अधिवक्ता अनुराधा खनगवाल तथा जिला बाल संरक्षण कार्यालय से लक्ष्मी विशेष रूप से उपस्थित रही। विद्यार्थियों एवं स्टाफ को संबोधित करते हुए अतिथियों ने पॉक्सो अधिनियम के उद्देश्यों एवं प्रमुख विशेषताओं की जानकारी दी।

भिवानी। लिटिल हार्टस स्कूल में पौधरोपण करते सीजेएम पवन कुमार व अन्य।

भिवानी। अतिथियों के साथ पदक विजेता खिलाड़ी। फोटो : हरिभूमि

जिला स्तरीय योग में भिवानी योग स्टूडियो का दबदबा, जीते अनेक पदक

भिवानी। योग क्रिया सोसाइटी द्वारा आयोजित जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता में भिवानी योग स्टूडियो के खिलाड़ियों ने अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा, अनुशासन और साधना का परिचय देते हुए विभिन्न आयु वर्गों में शानदार प्रदर्शन किया और कई पदकों पर कब्जा जमाया। विानी योग स्टूडियो के संचालक बंटी मेघवाल ने बताया कि वैश्य महाविद्यालय में हुई प्रतियोगिता के पुरूष वर्ग में 8 से 10 आयु वर्ग मे जियांश ने रजत, 16 से 18 आयु वर्ग में जतिन ने कांस्य, 18 से 21 आयु वर्ग में पारस ने स्वर्ण, 21 से 25 आयु वर्ग में अंकित ने स्वर्ण, 30 से 35 आयु वर्ग में अंकित यादव ने रजत, 35 से 45 आयुवर्ग में दीपक ने स्वर्ण एवं मुकेश ने रजत, 45 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में हरिओम ने स्वर्ण पदक हासिल किया। वहीं महिला वर्ग में 12 से 14 आयु वर्ग में मानवी ने कांस्य पदक, 30 से 35 आयु वर्ग में ज्योति ने स्वर्ण एवं सोनिया ने कांस्य, 35 से 45 आयु वर्ग में अंतिम ने स्वर्ण पदक हासिल किया।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005, 8295157800

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

बिजली व पानी की समस्या को लेकर डॉ. आंबेडकर कॉलोनीवासियों ने सौंपा ज्ञापन

कॉलोनीवासियों ने की समस्या के जल्द समाधान की मांग

पिछले काफी दिनों से पीने के पानी व अघोषित बिजली के कटों से क्षेत्रवासी परेशानः मेहरा

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। जनस्वास्थ्य विभाग के एसई सुनील रंगा को ज्ञापन सौंपते डॉ. अंबेडकर कॉलोनीवासी। फोटो : हरिभूमि

दादरी गेट ढाणी रोड स्थित डॉ. अम्बेडकर कॉलोनी निवासियों ने मंगलवार को सामाधान शिविर और जनस्वास्थ्य विभाग के एसई सुनील रंगा को ज्ञापन सौंपा और कॉलोनी में पिछले काफी दिनों से पीने के पानी की बनी समस्या से अवगत करवाया। इसके साथ ही उन्होंने कॉलोनी में बार बार लग रहे अघोषित बिजली के कटों के प्रति भी नाराजगी जताई और उक्त समस्याओं का जल्द से जल्द समाधान करवाने की गुहार लगाई।

कॉलोनियों में 3-4 दिन में आता है पानी

डॉ. अम्बेडकर कॉलोनीवासी राजू मेहरा, सतबीर डाबला, धर्मबीर रंगा, पवन डाबला, चन्द्रभान सुरलिया, मनीराम प्रजापति, रत्न मिस्त्री व कुलबीर बिलावल आदि ने बताया कि डॉ. अम्बेडकर कालोनी, इन्द्र नगर बिसियावाली जोहड़ी व न्यू अम्बेडकर कालोनी में पीने के पानी की भारी समस्या बनी हुई है। उक्त कॉलोनियों में 3-4 दिन में पानी आता है और बहुत कम प्रेशर खोला जाता है, जिसकारण अधिकतर गलियों में पानी सप्लाई नहीं पहुंच पाती। उन्होंने कॉलोनियों में पूरे प्रेशर के साथ नियमित पेयजल सप्लाई छोड़ने की मांग की। इसके साथ ही 700-800 घरों पर केवल मात्र एक ट्रांसफर लगा हुआ है, जिसके चलते ट्रांसफार्मर पर ज्यादा दबाव रहता हैं और बार बार जम्फर व फ्यूज उड़ जाते हैं, जिसकी वजह से क्षेत्रवासियों को भयंकर गर्मी के मौसम में पूरी रात बिना लाइट व अंधेरे में काटनी पड़ती हैं। इसके अलावा कॉलोनी की पुरानी तारों में बार बार बिजली फाल्ट हो जाते हैं, जिनको बदला जाए, ताकि क्षेत्रवासियों को परेशानियों का सामना न करना पड़े। क्षेत्रवासियों ने समाधान शिविर में पहुंचकर उपायुक्त तथा जनस्वास्थ्य विभाग में विभाग के एसई को ज्ञापन सौंपा और पानी की सुचारू सप्लाई की मांग की।

भटके बच्चे को सीडब्ल्यूसी और जीआरपी ने परिजनों से मिलाया

भिवानी। जिला बाल कल्याण समिति (सीडब्ल्यूसी) और जीआरपी पुलिस के संयुक्त प्रयासों से रास्ता भटककर भिवानी पहुंचे मासूम बच्चे को सुरक्षित उसके परिवार से मिला दिया गया। 9 जुलाई को जीआरपी की महिला हेड कांस्टेबल सुनील कुमारी और हेड कांस्टेबल मोनिया को बच्चा संदिग्ध अवस्था में मिला था। बच्चा अपना पता बताने में असमर्थ था। इसके बाद सीडब्ल्यूसी और जीआरपी ने यूपी, राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात की पुलिस व बाल कल्याण समितियों से संपर्क कर तलाश शुरू की। प्रयासों के बाद बच्चे के परिजनों का पता उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में लगा। कानूनी प्रक्रिया पूरी कर बच्चे को माता-पिता के सुपुर्द कर दिया गया।